राग श्री कालेरो

हम चडी सखी संग रे, रूड़ा राज सों राखो रंग, सखी रे हमचडी।। टेक ।।
सतगुर मारो श्री वालोजी, तेह तणें पाए लागूं।
मूल सगाई जांणी मारा वाला, अखंड सुखडा मांगूं।। १ ।।

हे सखियो! हम पर प्रेम की मस्ती छाई है। अपने प्यारे श्री राजजी से आनन्द करो। मैं अपने वाला जी (सतगुरु के) चरणों में प्रणाम करती हूं और अपना मूल का सम्बन्ध जानकर प्रीतम से अखण्ड सुख मांगती हूं।

सुक जी ना वचन सुणावी काने, ततखिण कीधो अजवास।
आटला दिवस कोणें नव जाण्यूं, हवे प्रगट थयो प्रकास।। २ ।।

श्री शुकदेवजी की वाणी सुनाकर तुरन्त मुझे जागृत बुद्धि (तारतम) का ज्ञान दिया। इतने दिन तक जिस पारब्रह्म को किसी ने जाना नहीं था, अब जाहिर हो गए।

आंकडियो माहें छे विस्मी, झीणी गूंथण जाली।
जेनो कागल जे पर हुतो, तेणे घूंटी सर्वे टाली।। ३ ।।

श्री शुकदेवजी की वाणी भागवत में कठिन आंकड़ियां हैं, जो बारीक जाली की तरह गुंथी हैं। यह भागवत ज्ञान जिन ब्रह्मसृष्टियों के लिए आया था, उन्होंने ही इन आंकड़ियों को खोला।

हवे जेणे ए निध प्रगट कीधी, भली ते बुध प्रकासी।
दीसंतो आकार ज दीसे, पण वेहद पुरनों वासी।। ४ ।।

अब जिसने इस जागृत बुद्धि (तारतम वाणी) के ज्ञान को प्रगट किया उनको देखो। उनका आकार (तन) तो साधारण दिखाई देता है, परन्तु बेहद से पार परमधाम में रहने वाले हैं।

तारतम लई श्री राज पधारया, थयूं ते सर्व ने जाण।
सखियो कहे अमें आवी ने मलसूं, मलिया ते मूल एधाण।। ५ ।।

तारतम लेकर श्री राजजी महाराज आए। जिससे सबको जानकारी मिली। अब सब ब्रह्मसृष्टियां कहती हैं कि हम सब आकर मिलेंगी। हमारे मूल सम्बन्धी श्री प्राणनाथजी प्रगट हो गए हैं।

सखियो सर्वे आवी जुजवी, एक बीजीने खोले।
आ लीला केम छानी रेहेसे, सखियो मली सहू टोले।। ६ ।।

अब सब सखियां अलग-अलग आकर एक-दूसरे को ढूंढ रही हैं। अब यह लीला कैसे छिपी रहेगी? यहां सखियां अपने-अपने जुत्थों (समूहों) में आ रही हैं।

रास रच्यो रमसूं रूडी भांते, प्रगटिया परमाण।
ए सुख सोभा आंणी जिभ्याएं, केम करी करूं वखाण।। ७ ।।

जागनी रास का खेल रच गया है। हम सब अच्छी तरह से जाहिर होकर खेलेंगे। इस सुख की शोभा का वर्णन इस जबान से किस तरह से करूं?

पेहेली वृन्दावन मां रामत, वली ते आंहीं उतपन।
आ लीलाओने प्रगट करसे, सुकजी तणें वचन।। ८ ।।

जो आनन्द की रामत (क्रीड़ा) वृन्दावन में की थी, वही अब दुबारा प्रगट हुई है। इन दोनों लीलाओं का वर्णन श्री शुकदेवजी की वाणी से होगा।

Nijanand App

वृज रास आंहीं तेहज लीला, ते वालो ते दिन।
तेह घड़ी ने तेहज पल, वैराट थासे धंन धंन।। ९ ।।

यहां पर वही बृज-रास की लीला हो रही है। वही वालाजी हैं, वही दिन है, वही घड़ी है, वही पल है, जिसमें वैराट अखण्ड होकर धन्य-धन्य होगा।

अमें मांगी रामत राज कनें, ते तां पेहेली दाण देखाडी।
कांईक मनोरथ रह्यो मन मांहें, ते रंग भर आहीं रमाडी।। १० ।।

हमने श्री राजजी से खेल मांगा था। उन्होंने पहली बार दिखाया। फिर भी मन में कुछ चाहना रह गई थी। उस इच्छा को अच्छी तरह से खेल दिखाकर पूरा किया।

श्री श्री जी ने चरण पसाए, जसिया हमची गाए।
थोडा दिनमां चौदे लोकें, आ निध प्रगट थाए।। ११ ।।

जसिया (एक सखी का नाम) मस्ती में भरकर उमंग से गाकर कहती है कि श्री प्राणनाथजी के चरणों की कृपा से थोड़े ही दिन में यह तारतम वाणी का ज्ञान चौदह लोकों में फैल जाएगा।

॥ प्रकरण ॥ १२४ ॥ चौपाई ॥ १७७३ ॥

राग मारू

वृथा कां निगमो रे, पामी पदारथ चार।
उत्तम मानखो खंड भरथनों, सृष्ट कुली सिरदार।। १ ।।

श्री मेहेराज ठाकुरजी कहते हैं कि तुम्हें चार उत्तम पदार्थ मिले हैं। उनको व्यर्थ क्यों गंवा रहे हो? उत्तम मनुष्य तन, भरत खंड, कलियुग, ब्रह्मसृष्टि और उनके सिरदार पारब्रह्म अक्षरातीत मिले हैं।

सेठें तमने सारी सनंधे, सोंप्यूं छे धन सार।
अनेक जवेर जतन करी, तमें लाव्या छो आणी वार।। २ ।।

पारब्रह्म श्री राजजी महाराज ने अच्छी तरह से यह (चारों) अमूल्य धन दिया है। बहुत उपाय करने के बाद (चौरासी लाख योनियों के बाद) यह मनुष्य तन तुम्हें मिला है।

सत वोहोरीने सत ग्रहजो, राखजो रुडी प्रकार।
आणी भोमें रखे भूलतां, पछे सेठ तणो वेहेवार।। ३ ।।

सत के बदले में सत ही खरीदना, अर्थात् यह इतना कीमती तन है इसके बदले पारब्रह्म को ही ग्रहण करना। माया तो झूठी है। इसमें जीवन गंवाना नहीं और इसे सम्भाल कर रखना। इस माया के ब्रह्माण्ड में भूल न जाना, क्योंकि इसके बाद सेठ जी (पारब्रह्म) के पास जाना है। तुम सत्य के व्यापारी हो। सत पारब्रह्म को ही लेना।

अनेक वार तरफडी मरीने, दुख देखी आव्या छो पार।
लाख चोरासी भमीने आव्या, आहीं मध्य देस वेपार।। ४ ।।

अनेक बार तड़प-तड़पकर मरने के बाद इस मनुष्य तन में आए हैं। चौरासी लाख योनियों में घूमने के बाद इस मृत्युलोक में भव से पार होने के लिए आए हो।

Nijanand App